भोजपुरी काव्य संग्रह

ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशन

हो न हो

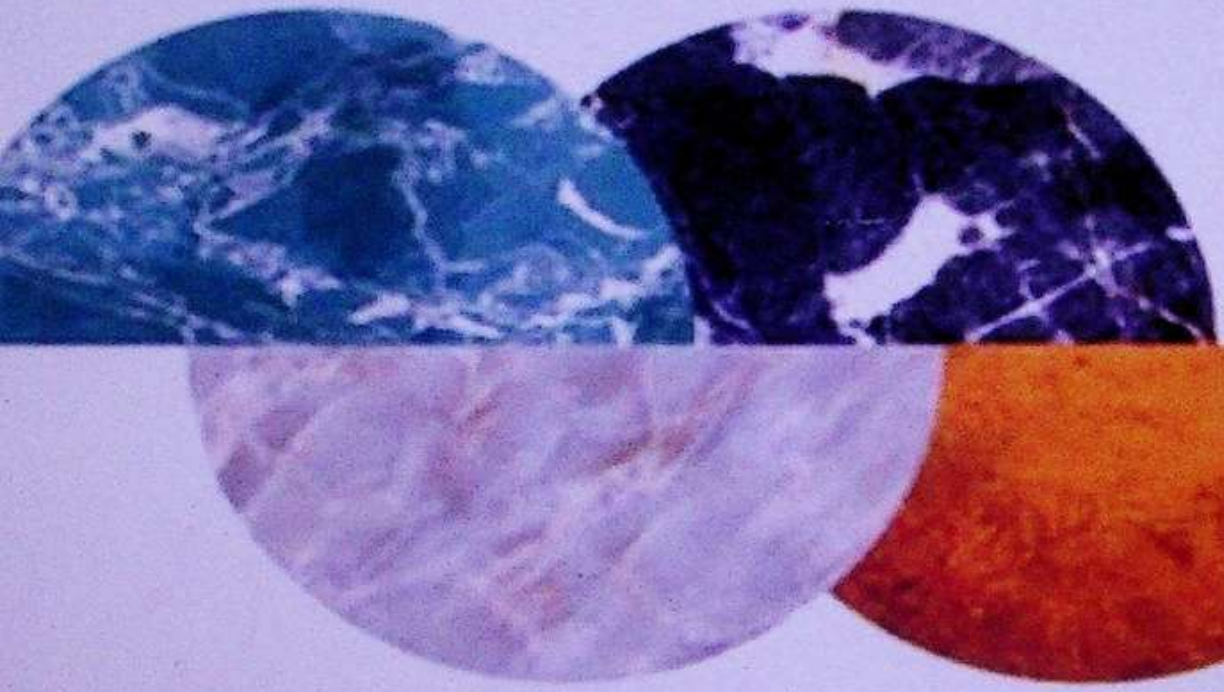

कनक किशोर

www.bhojpurisahityangan.com

हो न हो

(कविता संग्रह)

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

हो न हो

कनक किशोर

ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशन
भोपाल, मध्य प्रदेश

www.bhojpurisahityangan.com

ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशन

बी-209 गीत स्काई वैली मित्तल कॉलेज रोड
नवी बाग, भोपाल, मध्यप्रदेश-462038

I.S.B.N : 978-81-19395-68-2

संस्करण : 2025

© कनक किशोर

मूल्य ₹ : 250.00 रुपये

लेज़र कम्पोजिंग : इज़मत ग्राफिक्स, गाजियाबाद,
मो. 99112235423

मुद्रक : वंश प्रिंटर्स

हो न हो : कनक किशोर

Ho Na Ho By Kanak Kishore

इस पुस्तक में व्यक्त विचार पूरी तरह से लेखक के अपने विचार हैं। विवाद की स्थिति में प्रकाशक अथवा मुद्रक उत्तरदायी नहीं होगा। प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक को या इसके किसी अंश को संक्षिप्त, परिवर्तित कर प्रकाशित करना या फ़िल्म बनाना क़ानूनी अपराध है।

www.bhojpurisahityangan.com

समर्पण

'सूझ-बूझ' के संपादक, भोजपुरी प्रेमी स्मृति शेष कृपाशंकर प्रसाद जी, जे हमार भोजपुरी लेखन के एगो दिशा देलन, जे भोजपुरी के अपना अस्मिता से जोड़ के जियलन, जे हाले में अचके हमनी के छोड़ि अंतिम जतरा प प्रस्थान कर गइनीं, के चरणन में सादर श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित।

कनक किशोर

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

'हो न हो'

जहाँ जीवन में चारू ओर अझुरहट आ तनावे होखे, मनई-मन में अकुलहट आ उबियाहटे भरल होखे, उतावलापन, उबाल आ बेचैनिये समाइल होखे तब अइसनका समय में कविता में संघर्ष आ प्रतिरोध के स्वर स्वाभाविक बा। कविता मानव-मन के भावन के उच्छ्वास आ ओकरा माथा में उमड़त-घुमड़त सोच आ विचारे के कलात्मक अभिव्यक्ति होले। इहे कारन बा कि आज हर भाषा के कवितन में मौजूदा समय आ समाज के विसंगतियन, विद्रूपता आ चुनौतियन के बहुत मुखर वर्णन देखे के मिलत बा। लोकभाषा भोजपुरियो एकर अपवाद नइखे। देश, समय आ समाज के साथे डेग में डेग मिलावत चलेवाला भोजपुरी कवि अपना कवितन में आज के दौर के तबाही आ तल्खियन के पूरा गहिराई में जाके समझत-बूझत उकेरे के कोशिश कर रहल बाड़ें।

भोजपुरी गद्य आ पद्य-दूनू दुनिया में जमके भरपूर कलम चलावेवाला कनक किशोर जी के कविता संग्रह-'हो न हो'-एगो अइसन सिरिजना बा जवना में समय आ समाज के सोझा ठाड़ हर तरह के चुनौतियन आ सवालन से मुठभेड़ देखे के मिलत बा। एह संग्रह के शीर्षक-'हो न हो' आज मानव-मन में समाइल खौफ, आशंका, द्वन्द्व, अनिश्चय, गोपन, अनास्था आ तमाम तरह के नकार आ निषेध के ते झलकावते बा बाकिर एह सबका बावजूद ओकरा समझदारी आ विवेक में कवनों कमी नजर नइखे आवत। ई शीर्षक ओह संभावनों का ओरि इसारा करत बा जवन मनुष्य में जीवन के प्रति एगो ललक आ भरोसा बनवले राखेला। 'हो न हो' के मनोभाव अन्ततः बेहतरी आ नीमने का ओरि मनुष्य के प्रेरित करत रहेला। ई मनोभाव जहिया ले मनुष्यता के साथ निभावत रही ओकर जय-यात्रा जारी रही। एह संग्रह के शीर्षक-कवितो 'हो न-हा' के आशंका से शुरु ते होत बिया-

"हो ना हो/ विकास लूट के मसाला बा" बाकिर ओकर समझदारी साफ

www.bhojpurisahityangan.com

बा-"जंगल, जमीन लुटल/ लुटल पहाड़ आज/ फौज बेरोजगारन के/ सगरी बा खाड़ आज/ ना हाथे काम ना पेट में निवाला बा/ त का बा? जुमला बा, वादा बा/ कागजी गारंटी बा/ मन्दिर बा, मस्जिद बा/ धर्म के बाजार बा/ जाति के बोलबाला/ बाहुबली के चलती बा/ संत के सत्ता में खूब घुसपैठी बा।"

एगो दौर रहे जब भोजपुरी कविता में प्रेम, श्रृंगार, प्रकृति आदि से जुड़ल रचनने के भरमार रहत रहे बाकिर तबो भोजपुरी कविता सामाजिक गैरबराबरी, अन्याय, शोषण, धर्मान्धता, अलोकतांत्रिक आचरण आदि के प्रबल प्रतिकार के दिसाई कवनों लापरवाही के शिकार ना रहे। आज ते भोजपुरी कविता के मूल स्वरे प्रतिरोध आ प्रतिकार के हो गइल बा। आज गीत-गजल भा कविता के हर तरे के काव्य-रूप में भोजपुरी काव्य के सामाजिक-आर्थिक चिन्तन, सोच-विचार के तौर-तरीका आ अभिव्यक्ति-शैली के प्रखरता गौर करे लायेक हो गइल बा।

कवि कनक किशोर स्वतंत्र सोच आ चिन्तन के ओह परम्परा से पूरा तरे वाकिफ बाड़न जवन कवनों रचनाकार के सच्चाइयन से कतराये के ना, बलुक जूझे के सिखावेले, सत्ता के तरवा सुहरावे के ना बलुक ओकरा लुभावन-ललचावन हरकतन के भरम आ मायाजाल समुझत-बूझत, ओकरा के तार-तार करे खातिर उदबेग देले। कवि कनक जी हर तरह के गिरावट के बावजूदो कविता के भीतरी ताकत के बूझे वाला सर्जक बाड़न। उनका पता बा कि "कविता संभवतः आज के समय के ऊ आखिरी आवाज बिया जवना के बाजार आ हिंसा अभी ले मलिन आ गुमराह नइखे कर सकल।" (राजेश जोशी)

अइसे त सगरी भोजपुरिहा मन-मिजाजे निधड़क होके बोले-बतिआवे वाला होला बाकिर कनक जी अपना कवितन में एगो पुरहर ढीठ आ मजबूत इरादा वाला कवि के रूप में नजर आवत बाड़न। कविता में ढिठाई कवनों बेजाँय बात ना होला बशर्ते कि ऊ सतर्क आ तथ्यपरक होखे आ ओकर सगरी निष्ठा आ प्रतिबद्धता आम जन के प्रति सच्चाई से जुड़ल होखे। कनक जी एह बात के साफ तरे समुझत बाड़ें तबे ते लिखत बाड़ें-

"कंकड़, पत्थर, सीप, मोती/ सभ समेटले बानीं हम/ साँच के आंकी/ आपन चसमे से नाहीं/ जन के आँखिन से/ विवेचना के धार से/ रचना के सटीकता के समझि/ लोक के सामने रख दीं।" (परख)

दरअसल कवनों चीज के जन के आँखिन से देखला पर उरेब भा गलती के संभावना कम रहेला। कवनों खास चसमा चढ़ाके देखला पर दृष्टि में वस्तुपरकता आ निष्पक्षता के अभाव झलके लागेला।

कनक जी के कविता जनधर्मी कविता बिया। आम जन के तकलीफ आ

www.bhojpurisahityangan.com

तबाही के नंगा आँखिन से देखि के ऊ उकेरले बाड़ें-बिना कवनों लाग-लपेट के। इहे कारण बा कि उनका कविता में बिम्बन आ प्रतीकन के प्रयोग ले जादे साफगोई में भरोसा दिखावल गइल बा। कहीं-कहीं कविता 'स्टेटमेंट' भा सूक्ति के रूप ले लेले बिया जरूर, बाकिर एजवो ओकरा मारकता आ बेधकता में कवनों कमी नइखे आइल। कनक जी आज के सत्ता आ व्यवस्था से पूरा तरे उदास आ खिन्न बाड़ें, खिन्ने नइखन बलुक उनकर भरोसा डगमगा उठल बा। भरोसा आ विश्वास के टूट आदिमी में आक्रोश के जन्म देला। कनक जी के आक्रोश आ छोभ जादेतर जगह पर व्यंग्य के सकल-सूरत अख्तियार कर लेले बा। उनका एह व्यंग्य में खूब नुकीलापन बा, चुभन बा। ऊ कविधर्म के समुझे-बूझे वाला रचनाकार बाड़ें-

"कवि कविता करेला/ गुनगान ना/ एही से कवि का घरे/ सिक्का के खनक ना/ अईठात आंत से उठत/ धुआँ दिखाई पड़ेला।" (भूख आ कविता)

कविता के काम नारेबाजी ना हऽ, ना फतबाबाजी हऽ। बाकिर व्यवस्था के दुरभिसंधियन के खिलाफ व्यक्ति-चेतना के मुखर प्रतिकार खातिर प्रेरित कइल ओकरा दायित्व में आवेला। कवि कनक किशोर अपना रचनाधर्मिता के सामाजिक सरोकार के हर तरह के विषयन से जोड़े के सार्थक प्रयास कइले बाड़ें। उनका कविता के कैनवास में नारी-विमर्श, दलित-विमर्श, बाजारवाद आ अपसंस्कृति के पइसार के चलते भारतीय सांस्कृतिक मूल्यन के क्षरण आदि हर तरह के बातन के समावेश बा।

कवि कनक के नारी-विमर्श के कवितन में पुरुष वर्ग से अपना अहंकार से उबरे के कामना बा त दोसरा तरफ एजवा स्त्री-जागरण के स्वरों सजोर बा। उनकर एगो कविता 'हमार हिस्सा' के पंक्तियन के देखल जा सकत बा-

"समय कह रहल बा हमरो से/ आपन पहचान ले/ आपन आकाश ले/ अपना हिस्सा के धूप ले/ अपनो जिनिगी के ऊष्मा दे।" 'मर्द के अंकगणित', 'काठ के कबूतर', 'नारी' आदि कवितन में नारी-विमर्श के बातन के विस्तार मिलल बा। कवि नारी-विमर्श के बातन के बीच-बीच में पुरुष वर्गों के पक्ष बहुत संवेदना के साथ राखत स्वस्थ समाज के सिरिजना खातिर दूनू के बीच सहयोग आ समन्वय के एगो सुखद-सुभग कल्पना करत दिखत बा-

"स्त्री-स्वतंत्रता के लड़ाई/ मिल के लड़ल जाई/ विश्वास रखऽ/ ई काठ के कबूतरो/ तोहार स्वतंत्रता के चिट्ठी/ घरे-घरे पहुँचाई।" (काठ के कबूतर)

-एजवा सवाल ई बा कि कवनों लड़ाई साथ मिलिके कइसे लड़ल जा सकत बा, जब लड़ाइये एक दोसरा के खिलाफ होखे? साँच पूछल जाव तऽ

www.bhojpurisahityangan.com

एजवा मूल जरूरत एक दूसरा के संवेदना से खिलवाड़ ना करि के एक दूसरा के भावना के पूरा कदर करे से जुड़ल बा।

कवि जानत बा कि पर्यावरण-असंतुलन के समस्या आज लगातार विकराल भइल जा रहल बा। कवि के पर्यावरण-चिन्तन में एह संकट के अनदेखी पर भयंकर तबाही झेले खातिर तैयार रहे के आगाही बा। कवि के कहनाम बा-

"वन के हरियरी/ आँखिन के सुकून देत रहे/ आजु ओहिजे खाड़/ मदानी के चिमनी उगल रहल बा आगि/ चिंगारी भरल धुआँ/ उड़त छाई से/ माटी के बुनावट/ बदल गइल/ वसंत के राग-रंग/ परा गइल/ कबो सुकून देत रहे/ हमार सुन्नर वन/ लुटा गइल।" (माटी के बुनावट)

"जल-जमीन-जंगल के ई चिन्ता एह संग्रह के आउरो कइगो कवितन में बा।" प्रश्न पूछल, अस्वीकार कइल, अपना हिस्सा के धूप, हवा अन्न आ पानी पर आपन अधिकार जतावल, शोषण के खिलाफ संघर्ष खातिर खड़ा भइल-ई सब स्त्री, दलित, आ आदिवासी रचनाशीलता के प्रतिमान हे। इहे कसौटी हई सनि-जवना से एह कवितन के गुणवत्ता तय होले।" (कविता का घनत्व-जितेन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ-286)। कवि कनक किशोर के समकालीन बोध के कविता एह सगरी प्रतिमानन पर खरा उतरा बाड़ी सं।

कनक जी वन विभाग के एगो उच्चाधिकारी रहल बाड़ें। आदिवासी समाज के लुटत जिनिगी, आर्थिक तंगी आ विस्मयकारी जीवट-सभके बड़ा करीब से देखले बाड़ें, एह से उनका रचनन में यथार्थ बहुत बारीकी से चित्रित भइल बा। एगो उदाहरण देखे लायेक बा-

"जंगल से गुजरत ट्रेन से/ दिखाई पड़ल/ मेहरारुन के झुंड/ जे कहीं/ माथे लकड़ी बोझा लेले रहे/ त कहीं/ खादान से चोरी-छिपे इकट्ठा कइल कोइला/ ऊ लकड़ी आ कोइला/ ओकनी खातिर जलावन ना रहे/ ऊ रहे भात आ रोटी।" (विकास के सच्चाई)

कवि पूँजीवाद के प्रकोप आ कॉरपोरेटी दुनिया के चक्रव्यूह में जनतंत्र के चरमराहट के भाँपत लिखत बा-

"कॉरपोरेट के चक्रव्यूह/ पूँजीवाद के नीति में फँसल/ जनतंत्र के आपन अब अस्तित्व कहाँ बा?/ जनतंत्र खोखला, रीढ़विहीन/ चरमरा रहल बा/ खड़ा बा तऽ/ पूँजीवाद के अलम पर।" (पूँजीवाद के अलम) कवि चाकचिक वाली दुनिया में बनावटीपन के लगातार बढ़त जा रहल मरजाद से चिंतित तऽ बा बाकिर ओकर व्यंग्य के धार एजवा देखते बनत बा-

"विदेशी चासनी में डूबल साहित्य/ दमदम दमकत बा/ खूब चमकत बा/

www.bhojpurisahityangan.com

जमाना कहत बा-जे चमकी/ ऊ महकी भा ना महकी/ आजु ओकरे बा गहकी।"

कवि डफोरी सत्ता के चाल, चरित्र आ चेहरा सबके तार-तार कर देत बा-

"बाकिर ऊ ना मानी/ हवाबाज हऽ/ खुदो उड़ी आ देशो के उड़ाई/ बढ़िया -बढ़िया जुमला सुनाई/ करजा लेके विकास-एक्सप्रेस चलाई।" (करजा)

कवि सत्ता के एह बिगाड़ के कारण दिल्ली के बिगड़ल हवो के कम नइखे मानत। ऊ कहत बा कि सत्ता केहू के रहो बाकिर दिल्ली के कुर्सी ओके बिगाड़े से बाज ना आवे-

"काहे कि सत्ता केकरो होखे/ सत्ताधारी केहू होखो/ दिल्ली के कुर्सी बिगाड़ देला सभके।" (बिगड़ल हवा)

मँहगाई के कनक जी "कमजोर के लुगाई आ गाँव भर के भौजाई" ना मान के सभके झँखावत चले वाली डाइन मनले बाड़ें। ई डाइन सभकर जिनिगी तबाह कइले जा रहल बिया। परिणाम बा कि कनक जी जिनिगी के बारे में ई कहे खातिर मजबूर बाड़ें-

"जिनिगी/ स्ट्राबेरी के खेत ना हऽ/ बबूर, बइर के जंगल हऽ।"

एह संग्रह में गोरख पांडेय जी के मशहूर जनगीत "समाजवाद बबुआ धीरे-धीरे आई !" के तर्ज पर एगो गीत शामिल बा-

"बाजारवाद बबुआ सबकुछ उड़ाई
अबहीं खेलावत बा अंगुरी पकड़ाई
गँवे-गँवे देखत चले सबके चबाई
मनई का संगे-साथे देश के मुआई
साधो! बाजारवाद ना हऽ मलाई।"

एगो कविता में किसान आ कवि के पीड़ा आ चरित्र के एक लेखाँ बतावत कवि लिखत बा-

"किसान आ कवि/ कवन देवता, डीहवार के ना गोहरावेले/ कवन ज्योतिषी के दरवाजा ना खटखटावेले/ बाकिर भूख आ दुख आज ले ना भागल/ चनरमा पांड़े साफ कहलें कि-दूनू आदिमी के जिनिगी में ई ना ओराई/ साँच मानीं अब ई जिनगिये जोरे जाई।" (किसान आ कवि)

समकालीन कविता के साथ कदमताल करतो कवि के ई एहसास बा कि लोकभाषा के प्रकृति प्रगीत आ लय का ओरिये आपन राह सहज रूप से गह पावेले आ ओही में ओकर मन-मिजाज रमेला। एगो गजलनुमा रचना में कवि के व्यंग्यात्मकता अपना चरम पर बा-

"लूट के ले आइब, कहँवा छुपाइब

www.bhojpurisahityangan.com

चोरों के गुनगान, कबले गाइब।

× × × ×

बानी संत के बा, करनी बा चोरी
धर्म के नाम लूट, कबले चलाइब।

× × × ×

अबहूँ सुधर जाईं, समय बा बदलल
कहले किशोर हम, जन के जगाइब।"

-जन के जगावहूँ वाला ई काम चलत केतना जमाना बीत गइल, पता ना ई जगावलो अब रस्मी आ फैसनिहा तौर पर हो रहल बा आ कि एकर असर ओह जन आ समाज के सेहतो पर कहियो पड़ी? जन बेचारा ते जाति आ धर्म के जटा-बरउवल में पिसात-गरात कहवाँ से कहवाँ ले पहुँच गइल बा ! बुझात बा, जइसे ओकरा पीड़ा के कवनों अंते नइखे! बाकिर एजवे कवि के व्यापक काव्य-चेतना के झलको देखे के मिलत बा जब ऊ आशा आ भरोसा के डोर थम्हले नजर आवत बा-

"उम्मीदे जिनिगी हऽ/ प्रतिरोध के तेवर/ तोहरा भीतर जिन्दा बा।"
(काहे नइखे लउकत)

कवि कनक किशोर प्रतिरोध के तेवर मौनो में परख लेत बाड़ें, ऊ चुप्पियो के चीख सुन लेत बाड़ें। ऊ कहत बाड़ें-दो

1-"मौन बिनु किछु कहले/ बहुत कुछ कह जाला/ ×××जहाँ शब्द मौन हो जाला/ मौन मुखर हो। जाला।" (अपना के पावे के)

2-"कई बेर/ अइसन होला/ हमरा मौन के अर्थ/ बोललको से भारी हो जाला।" (मौन-1)

कनक किशोर जी के एह संग्रह के कवितन के पढ़ला के बाद ई बात साफ हो जात बा कि उनकरा में समकालीन भोजपुरी कविता के अन्तर्वस्तु आ संवेदना के भरपूर समझ बा आ ओकरा अभिव्यक्ति के सहज स्वाभाविक शैली आ शिल्पो ऊ हासिल कर लेले बाड़ें। कहीं-कहीं जवन कुछ कचास बा, ऊ धीरे-धीरे आगामी रचनन में काव्यात्मक प्रौढ़ि हासिल कर ली। भोजपुरी लोक आ समाज के हर तरे के वाजिब चिन्ता उनकरा कवितन के कथ्य में शामिल बा, अभिव्यक्ति में अझुरहट नइखे, भोजपुरी मुहावरा आ कहाउतन के भरपूर प्रयोग बा आ साफगोइयो में कवनों कमी नइखे। हमरा पूरा भरोसा बा कि कवि जल्दिये ऊ अन्तश्चेतना विकसित कर ली जवन कवनों कवि के आवाज के एगो मुकम्मल आ जरूरी आवाज बना देले आ ऊ एगो कामयाब कवि बन जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

आधुनिकता-बोध से भरल समकालीन भोजपुरी कविता के सुदीर्घ परम्परा में कवि कनक किशोर एगो अइसन हस्ताक्षर बाड़न जिनका कवितन के जनपक्षधरता, कथ्य के स्पष्टता, विचारन के प्रखरता, संवेदना के सच्चाई आ रचनात्मक ईमानदारी बराबर रेखांकित कइल जाई। 'हो ना हो' के कवि के बेरि-बेरि साधुवाद।

-डॉ. सुनील कुमार पाठक
फ्लैट नं.-303, परमानन्द पैलेस
सर गणेशदत्त कालेज के समीप
आर.पी.एस.मोड़, दानापुर कैन्ट
जिला-पटना। (बिहार)
पिनकोड-801503
मोबाइल-7261890519/ 9431283596

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा सोच के लिखे ना आवे

साहित्य से लगाव रहल बा, जुड़ाव रहल बा, साहित्यकार के पूतो हई बाकिर ना अपना के साहित्यकार समझीं, ना साहित्यकार अस सोच के लिखीं, ना लिखलका के सजा के सामने रखींना। जे घर-समाज-सरकार में देखनीं हो न हो ओकरे के शब्द में बान्हे के प्रयास करींला। आजु विकास के लहर बा देश में, बाजारवाद के जहर के बीच मनई सांस ले रहल बा, करज से गरीब मजदूर आ किसाने खाली नइखे परेशान देशो परेशान बा त अइसना में का लउकी? जे हमरा-रउरा लउकत बा, जवन विकास रोटी के खेत में धुआं के गाछी रोप देलस, कारखाना में मज़दूर के जगह मशीन बइठा देलस हो न हो ओकरे गीत गावे के प्रयास कइले बानीं एह संकलन में। आह के तह में कविता छुपल रहेला, भूख में कविता छुपल रहेला, मजदूर-किसान के श्रम में कविता छुपल रहेला, नून, तेल, लकड़ी में कविता छुपल रहेला हो न हो ओहि कवितन के पढ़े आ चुराके पाठक के सामने रखे के एगो छोट प्रयास ह ई संकलन। एकरा के हमार विवशता कहीं भा साफगोई सच्चाई इहे ह।

सत्ता-धर्म के गंठजोड़, बाजारवाद के प्रभुत्व, कारपोरेट के ताकत के नीचे दबल मनई के सिसकी, दुख से फूटत कराह विकास के पटरी त दब गइल बा बुलेट ट्रेन के आवाज में अइसन बात नइखे। लोक में झंकला पर, लोक से जुड़ला पर सब लउक जात बा, हो न हो उहे देखलका के कविता के रूप देवे के प्रयास ह ई संकलन। बन, नदी, बालू, जंगल, पहाड़, खेत ग़ायब होला त परिवेश रोवे लागेला। हो न हो बदलत परिवेश के करूण कहानी ह ई संग्रह। एह संकलन में कल्पना के रंगीन चित्र ना लउकी, पांडित्य के भाषा ना लउकी बाकिर हो न हो घटनन में ओकर मौलिक रंग के छाप बचावे के प्रयास जरूर कइल गइल बा। कविता के कला के कसौटी पर संकलन के कवितन के पाठक-आलोचक देखी-परखी हम त जीवन आ समय से रूबरू करावे के प्रयास भर कइले बानीं।

www.bhojpurisahityangan.com

आज के समय में भ्रष्ट, पतित, सत्ता के दलाल, मुनाफाखोर, मठाधीश, नेता के मौज बा अउर गरीब, मजदूर, किसान, साधनविहीन मर रहल बा नून, तेल, लकड़ी के जुगाड़ में। मुक्तिबोध, धूमील, गोरख के समय ना रहल आजु बाकिर पूँजी के वर्चस्व कायम बा आजुवो। पूँजी कुछ लोग के आँगन में सिमट के रह गइल बिया। आम आदमी रोजी-रोटी खातिर जूझ रहल बा। संकलित कवितन में एही सब बात के रखे के प्रयास कइल गइल बा। आम आदमी के बात करे के कोशिश कइल गइल बा कवितन में।

जनता आ आम जन के समस्या से विमुख होके चलला पर कविता अपना उद्देश्य में सफल ना हो सके। संवेदना के जमीन पर खड़ा होके समय के सच्चाई के बुझल आ मानवता खातिर जमीन तइयार कइल कविता के काम होला। अब किताब रउवा हाथ में बा त रउवा बताइब कि कविता के साँचा में कविता केतना सफल बाड़ी स एह संकलन के? डॉ. सुनील कुमार पाठक आपन व्यस्त जीवनचर्या बीच एह संकलन के भूमिका लिख ससमय उपलब्ध करवनीं एह खातिर हम दिल से साधुवाद देत आभार प्रकट करत बानीं। वरूण महेश्वरी जी अउर ज्ञानमुद्रा प्रकाशन परिवार के हृदय तल से आभार, जेकरा सहयोग से ई पुस्तक ससमय हमनी बीच एह रूप में आइल।

जय भोजपुरी।

-कनक किशोर

चलभाष-9102246536

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रम

'हो न हो'	**07**
हमरा सोच के लिखे ना आवे	**15**
भूख आ कविता	21
तेल, नून आ लकड़ी	23
कुछ कह रहल बा	26
हमार हिस्सा	29
मरद के अंकगणित	31
माटी के बुनावट	34
हो न हो	36
भोर	38
साख	40
कारगर हथियार	41
छलवा	42
नारी	43
प्रतिरोध	45
जुग के मांग	46
राजनीति	48
काहे नइखे लउकत?	50
काश हम राह बन जइतीं	52
दर्द के रेखा	53
महाजनी सभ्यता	54
सुख के चान	56

www.bhojpurisahityangan.com

काठ के कबुतर	58
का सही? का गलत?	61
विकास के सच्चाई	62
विकास के खेल	64
दबल-छिपल	65
पूँजीवाद	67
कवले कुटब झाल	69
ई बता दऽ भइया	71
पूँजीवाद के अलम	73
निजीकरण	74
का करीं विकास के बात	76
एगो आम आदमी	78
मुकम्मल	79
कुकुर	81
आलोचक	83
लबादा	84
पॉवर्टी लाइन	86
इंसान आ अजायबघर	87
प्रश्न चिन्ह	88
जाल	89
परख	90
करजा	92
साहित्य आजु काल्हु	94
किसान आ कवि	96
जिनिगी	97
काहे?	98
देर-सवेर	100
महँगाई	101
जोंक	102
मौन-1	104
मौन-2	106

www.bhojpurisahityangan.com

का बूझलऽ?	108
सुख आ भूख	110
नेता आ साधु	112
जिनिगी के मरम	113
अपना के पावे के	114
बाजारवाद बबुआ ना हऽ मलाई	116
बिगड़ल हवा	118

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

भूख आ कविता

भात, रोटी, भूख
कविता में ना होला
उन्हिन में कविता होला

नून, तेल, लकड़ी में
खेत में
धुआंत आंत में
कविता होला

घाम में जरत चाम में
मजदूर के जरत खून
आ पसीना के बूंद में
कविता होला

मंदिर में भजन होला
सत्ता में ताकत होला
धन में गुमान होला
उन्हिन में कविता ना होला

कवि कविता करेला
गुनगान ना
एही से कवि का घरे

www.bhojpurisahityangan.com

सिक्का के खनक ना
अईठात आंत से उठत
धुआँ दिखाई पड़ेला।

www.bhojpurisahityangan.com

तेल, नून आ लकड़ी

राजकुमार मास्टर साहेब
कहत रहीं
बियाह लइकन खातिर
नाथि हऽ

एगो कुंआर लइका से पूछनीं
बबुआ बियाह बुझेलस
ई का हऽ?
बूझेनीं भइया, खूब बूझेनीं
उड़त चिरई के पांखि काटि के
जमीन पर पटक देवे के
प्रपंच आ बखेड़ा
ह बियाह

एगो जवान होत लइकी से पूछनी
बुचिया बियाह का होला?
कहलस हम का बताई
बाकिर माई, भउजी, बहिनिया, फुआ
जेकरा से पूछीं
त इहे कहेली सं कि
जान बचिया बियाह हऽ
तेल, नून आ लकड़ी

www.bhojpurisahityangan.com

केशव भइया पढ़ल-लिखल कमासुत हवन
उहां से पूछनी
बियाह का हऽ?
कहले अबहीं ले पूरा ना बुझाइल
बाकिर जतना बुझाइल
इहे कहब बियाह तऽ ह
तेल, नून, लकड़ी।

ई सब बाति सुनिके
लखन चा बोललें कि
भूख के जोर आ
पेट के शोर के आगे
सब शोर झूठ,
तेल, नून आ लकड़ी
सब समस्या के हल ह
एकरा से अहम् कुछु ना होखे,
आगे कहले कि
पेट भरेला त
दिमाग के खुराफतियो
अपने आप शांत हो जाला

बव्वो कहत रहन कि
भूख आ पेट धरम हऽ
ई धरम बांचेला
करम से
आ करम के उपज ह
तेल, नून आ लकड़ी

समय बदलल
डिजिटल जुग, आभासी दुनिया
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

www.bhojpurisahityangan.com

सब आ गइल
बाकिर पेट दिमाग पर आजुवो भारी बा
काहे कि पेट में भूख रहेला
जेकरा चाहीं
तेल, नून आ लकड़ी।

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ कह रहल बा

थोड़े से लोगिन के कब्जा
संसाधनन पर,
आम जन के
अधिकारन के अपहरण,
कुछ कह रहल बा

गंदा बस्ती आ कचरा के पहाड़,
ओह पहाड़ पर
अन्न के दाना के टटोलत
लइकन के टोली
कुछ कह रहल बा

सुरक्षा घेरा में कुछ लोग
उनुकर वफादारन के जिनिगी
उन्हिन के चारों तरफ फैलल
रंगीनियत
कुछ कह रहल बा

हमनी जस लोग
जे ना सम्पन्न बा
ना विपन्न
हालत से समझौता कर
चुप्पी सधले रोजगार के विकल्प तलाशत

www.bhojpurisahityangan.com

चउराहा पर चाय-पकौड़ी के ठेला लगा
सगोतिया ग्राहक के
इंतजार में टकटकी लगवले बा इहो
कुछ कह रहल बा

एहनी के कहलका पर
केहू के कान पर जूं नइखे रेंगत
आ जेकर सुनेला ऊंच सुनेवाला लोगिन
ऊ जा बइठल गोदी में
चारण बनिके इहो
कुछ कह रहल बा

एगो अफवाह बा
तहखाना में ताजमहल के
देवी स्थान के
अफवाह पर कान ना देवे के
बाकिर समय गवाह बा
अफवाह से उपजल स्थिति से जे
कुछ कह रहल बा

सोंचत रहे आदमी
बढ़िया दिन आई
मनई खुशहाल होखी
बाकिर मनई आ समय के
कहलका केहू सुनते नइखे
ताकत आ पूँजी के जारी ई खेलो
कुछ कह रहल बा।

गंगा-जमुनी तहजीब
देश के जेकरा पर फख रहे,
विविधता में एकता
देश के शान रहे,

www.bhojpurisahityangan.com

राम-रहीम के देश में
आज धर्म आ भाषा के नाम पर
बंटवारा के बीज बोआत बा
बदलत समय
कुछ कह रहल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

हमार हिस्सा

तोहरा मालूम बा नूं
हमनीं के मेहरारू
पीठो से
देख सुन लिना जा
मरद के मन
का खोजत बा
ओकर आँखिने से ना
ओकर चमड़ों से
हाव-भाव से
जानि जाईला जा

'शीश उतारे भुई धरे
तब पैठे घर मांहि।'
एकरा शरण गइला से
भगवानो मिल जालन
अपनो पहचान मिल जाला
बाकिर हम इहे कइनीं
तोहरा घर में घुस के
भगवान तोहरे के मनलीं
बाकिर ना भगवान हमार भइलन
ना हमरा पहचान मिलल

तोहार चौखट, आँगन, चारदीवारी

www.bhojpurisahityangan.com

हमरा के हमरा आकाश से दूर रखलस
बाकिर हम तोहार चाल से
वाकिफ हो गइनीं
तोहरा के पढ़ि-समझ के,
तूहूँ समझल होखबऽ
हमरो के
हमार मन के इच्छों के
बाकिर मन के त छोड़ऽ
ना बूझलऽ आजु ले
देहो के चाह,
भूख, नींद, मैथुन
प्राकृतिक आवेग ह
ओकरो के कुचुल दिहलऽ
आपन मरदई जनावें में

समय बदलेला
समय कह रहल बा हमरो से
आपन पहचान ले
आपन आकाश ले
अपना हिस्सा के धूप ले
अपनो जिनिगी के ऊष्मा दे
अब ना मानब
गते घुसका दीं हमार हिस्सा
हमरा देने
मानसिकता बदलीं
समय बदलल।

www.bhojpurisahityangan.com

मरद के अंकगणित

कैंसर से
कम पीड़ादाई ना होला
मरद के देल पीड़ा

कैंसर
अब लाइलाज ना रहल
बाकिर उनुकर देल
पीड़ा लाइलाज बा

एह बीमारी के कारण
सेनूर ना हऽ
कारण हऽ पुरुष मानसिकता
जे हमरा पीड़ा में
सुकून खोजेला

सुहागरात से शुरू
दरद के जतरा
मौत के बाद
सजल चिता ले
साथे चलेला

साड़ी में
बाड़ी में

www.bhojpurisahityangan.com

घर में
चुहानी में
दरद आपन घर बना
बइठल बा
जनानी में

जूनूनी मरद
बाहर भले डेग-डेग पर हारेला
घर में ना हारल चाहेला
मेहरी से

मरद के इज्जत
हई जा
ओहि इज्जते खातिर
चौखट, आँगन बनावल गइल बा
लाल कोठी बनावल गइल बा
ढेर ऊँच
जेकरा में छिपल दरद
बाहर ना दिखाई देवे
उठत कराह
कोठिये में दब के रहि जाला

मरद-मेहरारू के केमेस्ट्री में
प्रेम के इकतरफा
रिसोर्स पर्सन मरद होला
मेहरारू रिसोर्स
आ मरद के अंकगणित में
मेहरारू के दरद के पहाड़ा
होम टास्क होला
जेकर अंत जिनिगी के साथ होला

कैलाश मनहर कहले

www.bhojpurisahityangan.com

मेहरारू एगो खुलल किताब
जेकरा के पढ़ला से जरूरी बा
जानल ओकर रहस्यमयी दरद के
ई तबे संभव बा
जब मरद के भीतर
पैदा होखी बइठ जाई
एगो मेहरारू।

www.bhojpurisahityangan.com

माटी के बुनावट

काल्हु जहाँ खाड़ रहे
सघन सखुआ बन
वन के हरियरी
आँखिन के सुकून देत रहे
आजु ओहिजे खाड़
मदानी के चिमनी उगल रहल बा आगि
चिंगारी भरल धुआँ

उड़त छाई से
माटी के बुनावट
बदल गइल
वसंत के राग-रंग
परा गइल
कबो सुकून देत रहे
हमार सुन्नर वन
लुटा गइल

मनइयें ना
बाघ, हाथी के घर
छिना गइल,
जंगल में वास करेवाला
मनई के जिनिगी
धूल, धुआँ में

www.bhojpurisahityangan.com

भुला गइल

माटी के बदलल बुनावट
जिनिगी के बुनावट
बदल देलस,
कसावट
बदल देलस
जिनिगी बिना ओरिचन के
खटिया जस
आपन मूल प्रवृत्ति खोके
विकास के मेला में
खोज रहल बा आपन राहि
जे ना भेंटाई
छत्तीस के खतियान
कवन काम आई?

www.bhojpurisahityangan.com

हो न हो

हो न हो
दाल में कुछ काला बा
देखत चलीं भाई जी
कुर्सी के खेल में
जोर अजमाइश चलि रहल
गँठजोड़ का मेल में
चुनाव में का कम घोटाला बा

हो न हो
आज लूट के बोलबाला बा
डिग्री बेचाय आज
शिक्षा बैपार बनल
चिकित्सा के नाम पर
देखीं का खेल हो रहल
सत्ता में बइठल चोर लूटेरा बा

हो न हो
काला धन के साथे हवाला बा
राजा बा शामिल
कारपोरेट के साथ मिल
मंत्री कहाँ कम बा
ऊपर-नीचे से गिल
कोट-कचहरी के मुँहे ताला बा

www.bhojpurisahityangan.com

हो ना हो
विकास लूट के मसाला बा
जंगल, जमीन लुटल
लुटल पहाड़ आज
फौज बेरोजगारन के
सगरी बा खाड़ आज
ना हाथे काम ना पेट में निवाला बा लूट

त का बा?
जुमला बा, वादा बा
कागजी गारंटी बा
मन्दिर बा, मस्जिद बा
धर्म के बाजार बा
जाति के बोलबाला
बाहुबली के चलती बा
संत के सत्ता में खूब घुसपैठी बा
लूट के बाजार में
सेठन के चलती बा
मस्ती बा रे भाई मस्ती
जेकरा हाथे कुर्सी बा।

www.bhojpurisahityangan.com

भोर

ना महकल जिनिगी के रहिया
ना देखनीं हम भोर
राति कटनीं भोर के आस में
कहाँ भेंटाइल भोर
आँखि से टपकत खून साथी
जनि बूझऽ तू लोर

सभे बांटे गारंटी मुँह से
ना बांटे रोजगार
वादा के भरमार बा सगरी
वोट बनल बैपार
जे जीती उहे लूट मचाई
बिनु मचवले शोर

राजा-रंक के बीच बढ़ल
आपस में बा खाई
संत-सत्ता-कारपोरेट के
खेल समझ ना आई
का गाई कजरी आ झूमर
टुभकें भीतर मोर

चाटत बा दीमक के जइसन
देश के भीतर-भीतर

www.bhojpurisahityangan.com

कवना के हम कहीं सुघर बा
सबके एके चरितर
सभ लूटत बा हमरे हिस्सा
हम सबसे कमजोर

रोटी लागे चान के टुकड़ा
घरे अमावस बइठल
मेहरी लुगरी साड़ी पेन्हले
पेट भूख से सटकल
ना सूखल आँखिन लोरवा
सपने रह गइल भोर।

www.bhojpurisahityangan.com

साख

साख
लोक में
ना रहल सत्ता के
ना राजनेता के
विपक्षों के चेहरा
उजागर बा

चुनाव में विकल्प
खोजे के प्रयास में
एगो नया चेहरा लउकल
जनता के समर्थन के बल
सांसद के सेहरा
ओकरे माथे

बाकिर ई का
ऊ सदस्यता ग्रहण करे के पहिले से
कुर्सी के जुगाड़ में
पक्ष-विपक्ष से तोल-मोल में
लाग गइल
सुने में आवत बा
अगिला उप प्रधानमंत्री के रूप में
हमनीं के सांसद
बटोरन लाल के नांव
सबसे आगे बा।

www.bhojpurisahityangan.com

कारगर हथियार

कोर्ट-कचहरी
कानून
थाना-पंचायत
कर्मकांड के आडम्बर
धर्म
आजुओ बनल बा
आमजन के
तबाही के
कारगर हथियार

सबसे बिगड़ल रूप में
साम्प्रदायिकता
साम्प्रदायिक तानाशाह के दरवाजे
बइठ आपन चमकत रूप
निरख रहल बिया
कारगर हथियारन के बल बढ़ल
आपन सौंदर्य के।

www.bhojpurisahityangan.com

छलवा

विकास जमीनी स्तर पर कम
कागज पर
चुनावी दंगल में
अधिका लउकत बा

बाजारवाद, भूमंडलीकरण
उदारीकरण के पेट से उपजल विकास
के देन हऽ
दलित, स्त्री, आदिवासी
आ पर्यावरण समस्या

विकास के गोड़ तऽ
कुचलल जा रहल बा
गरीब, दलित
मजदूर, किसान
आदिवासी आ नारी

गाँव, जंगल आ पहाड़
उधिया रहल बा
विकास के आन्ही में
लोक खातिर विकास
एगो छलवा।

www.bhojpurisahityangan.com

नारी

आजु के नारी
कहाँ उबरली स आजुले
झूठ मर्यादा आ पितृसत्ता
के चक्रव्यूह से

आजु के नारी
कहाँ दे पवली स आजुले
आपन भावना के
आपन इच्छा के
फरे-फूले खातिर खुला आकाश

आजु के नारी
काहे ढो रहल बाड़ी स आजुले
थोपल पुरुषवादी सोच के
जे ना देखल चाहेला स्त्री के स्वतंत्रता
ना चाहे मेहरारू के
ओकरा इच्छानुसार जीए देवे के

आजु के नारी
काहे पहचानल जात बिया
लैंगिकता के आधार पर
काहे पुरुष नइखे निकल पावत
ओकरा देह से बाहर

www.bhojpurisahityangan.com

कारण कुछ अउर ना
ओकरा देह में योनि बा

आजु के नारी
काहे मौन धइले बिया सब सममझियो के?
काहे कठपुतरी बनि नाच रहल बिया?
परिवार, समाज आ बाजार बीच
ऊ समझत बिया
पुरुष प्रधान समाज के खेल
बढ़िया से तबो।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रतिरोध

प्रतिरोध के बीज
मर जाला मनई के भीतर
पूँजी के कठपुतला
आ भोग के दास
बन गइला पर

मनई नाचत बा
बाजार के इशारा पर
हाय पइसा, हाय पइसा के थाप पर
इज्जत, मर्यादा भुला गइल बा
आँखिन पर परदा पड़ गइल बा

पिछलग्गू बनि घूमि रहल बा
अपना से कट के
अपना स्वार्थ के पीछे
अकेला पड़ गइल मनई
विद्रोह का करी
संगठन में ताकत होला।

www.bhojpurisahityangan.com

जुग के मांग

ना रहे के चाहीं
समाज में
जातिवाद, हिंसा, घृणा
अविश्वास, वैमनस्य
आपसी विद्वेष

बाकिर हवा दे रहल बा
बढ़ावा दे रहल बा
एहनी के
सांप्रदायिक ताकत
राजनैतिक चाल
बाजारवाद
धर्म-मजहब
अपना ताकत के बल पर

जुग के मांग
लोकहित से
सांप्रदायिकता आ राजनीति
के खिलाड़ी के
का लेना-देना,
देशहित सर्वोपरि
मात्र छलवा

www.bhojpurisahityangan.com

पूँजीवाद के जलवा
बिगड़ जाई
जुग के मांग देखला पर
ई एगो कटू सत्य।

www.bhojpurisahityangan.com

राजनीति

छल-प्रपंच
दाँव-पेंच
उठा-पटक
आज बनल बा
चुनाव के अंग

स्वार्थपरता
महत्वकांक्षा
अवसरवादिता
जनतंत्र में
टिकट खातिर
दिखा रहल बा
आपन रंग

प्रतिवद्ध
समर्पित कार्यकर्ता
के हाथे बा झोला
बाहुवली
भ्रष्ट, पतित, बेईमान
के माथे बा ताज,
महान देशभक्त बनिके देखऽ
घूम रहल बा लोला

www.bhojpurisahityangan.com

कथा-व्यथा के
अंत ना मिले
सभ दल एके चरितर
बा अंतर बस
झंडा रंग में
धंधा एके भीतर,
दल बदलत अब देर ना लागे
इहे आजु राजनीति
संत सत्ता के पीछे भागे
सेठ के गावे गीति।

www.bhojpurisahityangan.com

काहे नइखे लउकत?

चुनाव में विकास के गीत
रोजगार के वादा
झूठ से भरल पार्टी मेनिफेस्टो में
कवले उझराइल रहवऽ
सत्ता में बइठ कइलका लूट खसोट
काहे नइखे लउकत?

शहर के चौक चउरस्ता पर
खाड़ दिहाड़ी मजदूर
गाँव छोड़ के शहर गइल मनई के
जलालत भरल जिनिगी
ओकर हो रहल शोषण
काहे नइखे लउकत?

नोकरी के आस लेके गइल नवही
फुटपाथ पर ठेला लगावत बा
तवो सुवहित दू जून के रोटी
जुड़त नइखे रे भाई
बीमार पड़ला पर दवाई कहाँ से?
काहे नइखे लउकत?

तरक्की के नारा, बेहतरी के सपना के बीच
सड़क, प्लेटफार्म, फुटपाथ पर सुतल

www.bhojpurisahityangan.com

सड़कन पर कुचलल जात लोगिन
दू गो रोटी खातिर पार्टी के झंडा ढोवत
गोली के शिकार मनुआ आ महेन्दर
काहे नइखे लउकत?

समाज में बढ़त अपराध के ग्राफ़
सामाजिक असुरक्षा के भावना
सांप्रदायिकता के फैलत जहर
बेरोजगारी जनित कुंठा, तनाव
नशाखोरी के बढ़त चरण
काहे नइखे लउकत?

उम्मीदे जिनिगी हऽ
प्रतिरोध के तेवर
तोहरा भीतर जिन्दा बा
समाज आ संस्कृति के हमलावरन
जे नकाब पहिर प्रत्यक्ष भा परोक्ष
छल बल से मीठ बोल जाल फैला रहल बा
काहे नइखे लउकत?

www.bhojpurisahityangan.com

काश हम राह बन जइतीं

हम राह बन जाइल चाहींला
हम जानत बानीं
ओह राहि में
कवगो घुमावदार मोड़ आ रूकावट मिली
उबड़-खाबड़ त मिलबे करी
बाकिर आस के चमकत किरणों
श्रम के ताप आ संघर्ष के जज्बो भेंटाई

जे ओहि राहि प चलत लोगिन के
थाके ना दिही
आ संघर्ष के जीत होखेला
देर-सवेर
एकर भरोसा दिआई
हमार जिनिगी सफल हो जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

दर्द के रेखा

जनि उकेरीं
हमरा जिनिगी में घुलल-मिलल दर्द के
हम त पैदे भइल रहीं
तरहथी प दर्द के रेखा लेले

ऊ दर्द के रेखा
जे हमरा हथेली में बंद बा
रउवा उघार के का करब?
का मिली रउवा भा समाज के?

हम मेहनत से आपन हथेली के रेखा के
धधकत धूप में
खेत में आ कारखाना के भट्ठी त
मिटावे के प्रयास कइनीं
बाकिर दर्द के रेखा
जस के तस
आजुवो बा

जिनिगी में अंतर्निहित दर्द
आजुओ दहकत, सुलगत, टभकत रहेला
आ हम ढोवत रहिना ओह दर्द के
सहज ढंग से
ओकरा से प्यार जे हो गइल बा
अब ऊ दरद
अपना जस लागेला।

www.bhojpurisahityangan.com

महाजनी सभ्यता

सब काम के पीछे
गरज महज पइसा

राजा के राज एह खातिर की
अधिका मुनाफा
महाजन पूँजीपतियन के नावें,
सांच कहीं त
देश दुनिया में
महाजने के राज बा

दू भाग में बंटल बा समाज
बड़का हिस्सा त
मरे-खपे वालन के
ढेर छोट हिस्सा
ओह लोगिन के बा
जे आपन शक्ति आ प्रभाव से
बड़का समुदाय प कब्जा कर लेले बा

बड़ भाग के लोगिन संग
कवनो तरह के हमदर्दी नइखे
ना तनिको रियायत
ओह महाजन वर्ग के,
बड़का हिस्सा के लोग के

www.bhojpurisahityangan.com

अस्तित्व बा खाली
आपन मालिक खातिर पसीना बहावे
खून गिरावे के
आ एक दिन चुपचाप
एह दुनिया से चल जाये के

(प्रेमचंद के हंस में प्रकाशित आलेख 'महाजनी सभ्यता' के एगो अंश पर आधारित कविता)

www.bhojpurisahityangan.com

सुख के चान

दुख के चादर ओढ़ले
मनई के आँगन
इंतजार रहे
सुख के एगो छोट टुकड़ा के
काहे राह भुला गइल
सुख के चान

अमावस्या त घरे बइठले रहे
इंतजार रहे
पूनिया के चान के
रोटी आ बेटी दूनों भार भइल
काहे राह भुला गइल
सुख के चान

चान पे जा के का करब
उहाँ ना खेत-बधार
मशीनीकरण हाथ काटि के
कइलस बेरोजगार
छोट पेट रोटी के तरसे
काहे राह भुला गइल
सुख के चान

www.bhojpurisahityangan.com

नून, तेल, लकड़ी के फेरा
कटनीं जिनिगी आपन
सुबहित रोटी मिलल ना हमरा
ना केहू समझल आपन
हम मजूर रोजी ला तरसीं
काहे राह भुला गइल
सुख के चान।

www.bhojpurisahityangan.com

काठ के कबुतर

हमहूँ एगो मनई हई
खाली तोहार दूल्हा ना
खाली तूहीं नइखू एह जिनिगी में
माई, बाबू, भाई, बहिन
फुआ, आजी, बाबा बाडें,
छोटे सही आपन
एगो दुनिया बा
घर-परिवार बा
कइसे छोड़ दीं सभका के
तोहरा के पाके

तू तऽ हमनीं के बीचे के हउ
उत्तर-पूरब के ना
कामरूप कमाख्या गइलू ना आजुले
फेरू मरद के तोता बनावे के मंतर
कहाँ से सीख लेलू?
स्त्री स्वतंत्रता के माने
एकल जिनिगी ना होखे
अकेले केतना दूर ले जइबू?
अकेले केतना ऊपरे उड़बू?
एक पांखि के चिरई जस
फुदफुदा के रह जइबू

www.bhojpurisahityangan.com

मरद आ बरध के
बिनु नथले ना नियंत्रित
कइल जा सके,
राजकुमार माट्साब कहत रहीं कि
बेटा बिगड़े लागे तऽ
बिआह कर दऽ
बिआह नाथ ह लइकन खातिर
तोहरा देखि के हमरो लागत बा
ई बतिया सांच ह

जेकर बनरा सेही नचावे
सुनले बाड़ू नूं
त खूब नचावऽ हमरा के
एह में हमरा कहां एतराज बा
दुनिया नचावत बा
तूहूँ नचावऽ
बाकिर हम काठ के कबुतर ना हई
हमरा भीतर एगो जीव बा
मरद नांव ह ओकर
ऊ प्यार के भूखा बा
संवेदना ओकर मरल नइखे
मानवता के पुजारी ह

ओकरा चाहीं तोहार प्यार
माई-बाबू के दलार
भाई-बहिन के पुचकार
गाँव-घर हमार संसार
एह बाति के बूझऽ
मत बना के रखऽ फ्लैट में बंदी
सांस घुटत बा
देहिया में बझा के रखबू तऽ
जग के तुलसी कहां भेंटइहें?

www.bhojpurisahityangan.com

स्त्री-स्वतंत्रता के लड़ाई
मिल के लड़ल जाई
विश्वास रखऽ
ई काठ के कबूतरो
तोहार स्वतंत्रता के चिट्ठी
घरे-घरे पहुँचाई।

www.bhojpurisahityangan.com

का सही? का गलत?

बिना विलंब कइले
अमीर बने के
इच्छा बीज बो देले बा
भूमंडलीकरण
हमनीं के भीतर

तरीका दूनों उपलब्ध बा
वैध अउर अवैध
शार्टकट तरीका
अवैध होला

आजु के पीढ़ी के
शार्टकट भावेला
कहाँ सोचेला
का सही? का गलत?

www.bhojpurisahityangan.com

विकास के सच्चाई

बंगलूरू के उच्च साफ्टवेयर टावर से
दिखाई पड़ रहल बा
बगल के गाँव के ग़रीबी

एक्सप्रेस-वे पर एसयूवी के भरमार
एसयूवी रोक अमीर वर्ग
सड़क किनारे खेत में काम करत
किसान मजदूर संग
ले रहल बा सेल्फी
एप्पल के मोबाइल से

सरपट भाग रहल बा
वन्दे भारत
डिब्बा में उच्च मध्य वर्ग
उच्च वर्ग के
लोग के भरमार बा

ट्रेन सोन नदी के पास से गुजरल त
खिड़की से दिखाई पड़ल
नंगे पांव हल जोतत किसान
गेहूँ-बूंट कटनी करत मजदूर
ओह धूप में
जेकरा में

www.bhojpurisahityangan.com

सूरजो के माथ प
पसीना उठि आवेला

जंगल से गुजरत ट्रेन से
दिखाई पड़ल
मेहरारुन के झुंड
जे कहीं
माथे लकड़ी बोझा लेले रहे
त कहीं
खादान से चोरी-छिपे इकट्ठा कइल कोइला
ऊ लकड़ी आ कोइला
ओकनी खातिर जलावन ना रहे
ऊ रहे भात आ रोटी

एके देश में
विकास के अइसन दू रूप काहे?
दूनों में जमीन-आसमान जस अंतर
कह रहल बा
विकास के सच्चाई

www.bhojpurisahityangan.com

विकास के खेल

विकास के मीनार
ऊँच होखल जाता
दिनों-दिन
देश में

ओह मीनार पर चढ़िके
देखला पर
चहुँओरि दिखाई पड़त बा
लाचार मनई
जे बदहाल बा
बेरोजगारी आ महंगाई के मार से
देश में

आम मनई
बदहाली में खुद उलझ गइल बा
कि उलझा देल गइल बा
सत्ता समझत बा
खूब एह खेल के
आखिर कैप्टेनशीप त ओकरे बा
देश में।

www.bhojpurisahityangan.com

दबल-छिपल

बढ़िया दिन
दुनिया के तीसरा आर्थिक शक्ति
विकास के ऊँचा मीनार
बेहतर जीवन के सपना
के बीच दबल-छिपल बा
आम मनई के
रोजगार विहीन हाथ
धुआंत आंत के रोटी

कारपोरेट से गलबहियां कर
सत्ता सेंक रहल बा
खुद दबावे-छुपावे वाला
तंत्र के हिस्सा बनि
आपन गोटी

दबावे-छुपावे के नंगा करे वाला
सूचना तकनीक आ संचार माध्यम
कारपोरेट आ सत्ता के सहचर बनि
संवैधानिक मूल्यन के
रक्षा करे के जगह
गा रहल बा गुण सत्ता आ साहूकार के
बचावे खातिर चोटी

www.bhojpurisahityangan.com

आम मनई
भगवान के भरोसे काल्हु तक
आजुवो भगवाने के आसरा
सभे मिल दबले बा
ओकरे नरेटी।

www.bhojpurisahityangan.com

पूँजीवाद

नया जुग बा संचय लोलुप
लोकतंत्र बधिर
पूँजीवाद अधीर

खूब बढ़ल आजु संसाधन
टेक्नोलॉजी भरपूर
दरकत लोकतंत्र के खंभा
सब केहू के कसूर
धन कुबेर राजनीति प हाबी
समय के तासीर
पूँजीवाद अधीर

बाजारवाद के राहि में बनल
लोकतंत्र बा रोड़ा
काबू पावे खातिर ओह पर
अधिनायक के कोड़ा
आज्ञापालक परजा चाहीं
तानाशाह नाजिर
पूँजीवाद अधीर

दक्षिणपंथ के ओरि रूझान
केहू एक ना दोषी
व्यक्ति विशेष निमित्त मात्र

www.bhojpurisahityangan.com

बेवसथा सचहूँ दोषी
लोकतंत्र पर काबू खातिर
चाहीं एक शातिर
पूँजीवाद अधीर

धनकुबेर चाहेला हुकूमत
सब दिन अपना हाथे
पूँजी बल पर देश नियंत्रण
शासन के बल साधे
गाफा संसाधन बल आगे
लागे देश फकीर
पूँजीवाद अधीर

(गाफा-गुगल, घ्पल, फेसबुक आ अमेजॉन)

आज जरूरत बा पूँजी के
बाहुबली अधिनायक
आवारा संसद बल साधे
साथ ले धर्म के नायक
मीडिया झूठा बात बघारे
सांच के आगे लकीर
पूँजीवाद अधीर

दरक रहल आज लोकतंत्र
खतरा मे देश समाज
पूँजी आ संचार मिलल बा
सूनीं ओकर आगाज
शक्ति लोलुप पूँजी आ सत्ता
बना रहल तकदीर
पूँजीवाद अधीर

www.bhojpurisahityangan.com

कबले कुटब झाल

झोरा ढोवनीं बहुत दिन ले
कहाँ भेंटाइल माल
गुरुजी के चक्कर में भइया
रउवो बिगड़ल चाल
ए महराज! बूझीं ना बतिया
कबले कुटब झाल

दिन रात संगहीं में रहनी
चढ़े मिलल ना मंच
पनही आ छाता ले ढोवनीं
ना बननीं सरपंच
ए महराज ! कुछ अपनो सोचीं
कबले कुटब झाल

गुरुजी चलस सफारी से भाई
उनकर गलिया लाल
गारी सुनत बितेला तोर दिन
साइकिल बाटे मोहाल
ए महराज! अबहूँ त सुधरीं
कबले कुटब झाल

ड्राई फ्रूट्स आ स्पंजी रसगुल्ला
गुरु के संग में नार

www.bhojpurisahityangan.com

रउवा करम में भाई जी बतासा
राउर नार फरार
ए महराज! बजाई अब ढोलक
कबले कुटब झाल।

www.bhojpurisahityangan.com

ई बता दऽ भइया

गीत कवित हम का जानीं भइया
पानी बिनु बे पानी
जल, जंगल, जमीन से बेदखल
खोजत बानीं पानी
कहँवा गइल नदी सरोवर?
ई बता दऽ भइया

राज-पाट जेहि हाथ के दिहनीं
लूटे दूनों हाथे
पक्ष-विपक्ष अब रहल कहाँ जी
सब कुर्सी के साथे
कहँवा गइल सिद्धांत नीति?
ई बता दऽ भइया

धुरी विकास के तेजी से दउड़त
छीनि हाथ रोजगार
करजा लेके घीव पियत बा देश
घरे आ बइठल बाजार
कहँवा गइल लोक के नीति?
ई बात दऽ भइया

अन्न, पानी, दवाई सब महँगा
रोज नया बीमारी

www.bhojpurisahityangan.com

सत्ता-सेठ के मेलजोल करत बा
लूटे के तैयारी
कहँवा गइल प्रतिरोधी क्षमता?
ई बात दऽ भइया

वादा रखऽ तू अपने पास में
ना गारंटी चाहीं
पेटवा के चाहीं रोटी भाई जी
हाथ के कमवा चाहीं
कहँवा गइल सुशासन वादा?
ई बता दऽ भइया।

www.bhojpurisahityangan.com

पूँजीवाद के अलम

सामंतन के
शोषण आ अन्याय
कम भइल बा
बाकिर आज के समाज
गोद में जा बइठल
पूँजीवादी लोकतंत्र के

पूँजीवादी लोकतंत्र
अधिका भयानक आ क्रूर बा
ओकर जाल में हमा-सुमा छोड़ीं
सत्ता प्रबन्धक के दम घूंट रहल बा
बाकिर निजात के कवनो राहि
नइखे लउकत

कॉरपोरेट के चक्रव्यूह
पूँजीवाद के नीति में फँसल
जनतंत्र के आपन अब अस्तित्व कहाँ बा?
जनतंत्र खोखला, रीढ़विहीन
चरमरा रहल बा
खड़ा बा ते
पूँजीवाद के अलम पर।

www.bhojpurisahityangan.com

निजीकरण

कॉलेज के प्राध्यापक क्लास में
देश में विकास के गति में
निजीकरण पर प्रकाश डालत
एगो मेधावी छात्र से पूछले
निजीकरण का होला?

छात्र कहलस
कि निजीकरण के अर्थ होला
कारपोरेट के राजनीति से गठजोड़

प्राध्यापक के माथ सुनके ठनकल
कहले कइसे?

छात्र झट दे बोलल सर जी
धन, धरम, मीडिया के बले
कारपोरेट दे रहल बा बढ़ावा
ओहि राजनीति के
जे फिकिर करे ओकर
आ देश के सौंप दे ओकरा हाथे

प्राध्यापक ई कहाँ लिखल बा?
छात्र कहलस
किसान के बधार में

www.bhojpurisahityangan.com

मजदूर के मकान में
बेरोजगारी के खान ने
आदिवासी के जहान में
बालू के लूटान में
दारू के दुकान में
देश के पहचान में

प्राध्यापक ठीक बा
निजीकरण के प्रभाव के
एगो टटका उदाहरण बतावऽ
छात्र कहलस
'संसद के चुनाव'

www.bhojpurisahityangan.com

का करीं विकास के बात

पेट में सुवहित दाना ना
पीठे बाल नादान
माथे ईट के बोझि चढ़ल
कहऽ तू देश महान
श्रम बिकाता कोड़ी मोले
का करीं विकास के बात

जनतंत्र कागजी रह गइल
सपना भइल सुराज
मन के बात कहीं कंकरा से
कंहू ना सुने आवाज
मुँह पर ताला लागल सभके
का करीं विकास के बात

लाल गाल मेहरी के तोहरा
गरदन सोने माल
बदन ना साड़ी हमरा बाबू
भूखे सुतल लाल
नीक ना लागे वादा गारंटी
का करीं विकास के बात

दिल्ली भेजे दाल देश में
पहुँच ना पावे गाँव

www.bhojpurisahityangan.com

खूंटा अटकल दाल के दाना
केकर पकड़ीं पांव
ना सुने राजा, ना सुनेला बढ़ई
का करीं विकास के बात।

www.bhojpurisahityangan.com

एगो आम आदमी

हम कबहूँ अपना के
अकेला महसूस ना करीं
अकेला लोग बड़ा बदनसीब होला

सुरुज के सभ किरिन
हमार साथी ह
हवा, पानी, जंगल आ जीव जंतु
हमार आपन ह
हम कबहूँ अकेले ना रहीं

हम त अपना भूखों में
अपना के अकेला ना पाई
हमार पियास
कबो खाली हमार पियास ना रहल
हम बेकार बानीं अकेले ना
एकरो में करोड़ों लोग सामिल बा
एह देस-दुनिया के

हम एगो हुजूम हई
काफिला हई
सांस आस पर चलत बा
बूझनीं की ना?
हम एगो आम आदमी हई
कृष्ण चंदर जइसन।

www.bhojpurisahityangan.com

मुकम्मल

टुकड़ा-टुकड़ा में बंटल बा
हमार जिनिगी
जोड़े के कोसिस में पीछे ना रहनीं
बाकिर ना जोड़ पवनीं
एह से मुकम्मल तौर पर
अपना बारे में
ना कबो बता पाइब हम

काहे कि हम खुद मुकम्मल नइखीं
आ एह से मुकम्मल नइखीं कि
ना बदे बानी ना नेक
ना खूबसूरत बानी ना बदसूरत
ना कल्पना बानी ना हकीकत
कवनो तरह से हम मुकम्मल नइखीं

हमरा नजर में
हमार खुदो मुकम्मल नइखन
फेरू हम कइसे मुकम्मल?

बाकिर हम ओकरा के मुकम्मल कर देल चाहेनीं
जे ऊ घर ह तऽ ओह में एगो ईंटा लगाके
जे ऊ आइना ह तऽ एगो कांच के टुकड़ा जोड़के
हम बेनूर आँखिन के गड़हा पाट देल चाहींला

www.bhojpurisahityangan.com

आ झील जस लवरेज़ कर देल चाहींला
मुकम्मल भले नइखी, मुकम्मल बनाईला
कुछ जोड़-घटा के
ऊपर से रंग चढ़ा के

जिनिगी पहाड़ के जइसन बुलंद हो जाए
संपन्नता जाफरान के फूल जस महके
हमदर्दी जे झरना जस मनई के सीना में बहत रहे
एगो हिस्सा बनिके
मुकम्मल होखे के सुख जानल चाहत बानीं
अइसे इहो सांच ह कि
मुकम्मल के अंसो मुकम्मले होला।

(कृष्ण चंदर के' मेरी कुल कायनात यही झूठे सपने हैं' से भाव लेकर, प्रभावित होकर)

www.bhojpurisahityangan.com

कुकुर

जानत बानीं
पहिले कुकुर ना रहन सं
एह समाज में
भेड़िया रहन सं
जे हमनी के फेंकलका
हड्डियन के चूसे के चक्कर में पड़ि के
कुकुर हो गइलन सं

वफादार बाड़न सं
कुकुर के जाति आजु ले
हमनी के प्रति
कुकुरो होके

नेतो ना रहन सं
कुकुरमुत्ता जस
हमनी के समाज में
लोकतंत्र के देन हवन सं

नेता के सूँघे के शक्ति
कुकुर से कम ना होखे
जहँवा वोट लउकेला
ओहिजा चक्कर काटेला
आपन वोटर के हड्डी ना

www.bhojpurisahityangan.com

खून चूसेला
देस के दियका जस चाटेला
मौका मिलते
वोटर के छोड़ीं
आपन जातियों के काटेला

अतने ना नेता
वफादारो ना होखे
ना अपना वोटर के प्रति
ना अपना देस के।

www.bhojpurisahityangan.com

आलोचक

समग्र दृष्टि होखे
जेकरा भीरी
जे रचना के
परत दर परत खोलि के
रचना आ रचयिता के चित्त के
मरम बूझि
लोकधर्मिता निभावत
मानवतावादी बनि के
परिवेश जेवना में रचना रचाइल
आ प्रकृति के बीच
रचना के राखि
गहराई में डूबिके
आपन व्याख्या स्थापित करेला,
आलोचक
उहे रचना आ आलोचना
दूनों के मान राखेला।

www.bhojpurisahityangan.com

लबादा

सुनत बानीं
हमहूँ पैदा भइनीं
जइसे रउवा एह धरती पर अइनीं
हँ अंतर रहे त ई रहे
कि रउवा दुआर पर गाय आ बैल रहे
हमरा दुआर ना रहे
हमरा घरवा के आगे
सुअर के खोभाड़ रहे

रउवा घरे लक्ष्मी के वास
आ हमरा घरे दरिद्र बाबा के निवास रहे
अइसन काहे?
ना बुझाइल त बाबा से पूछनी
कि ई अइसन काहे?

बाबा कहले कि
पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत में मिलल बा
ई दरिद्रता के लबादा
फेंकलो से कहाँ फेंकाता
हटावे के कोशिश हमहूँ कइनीं
बाकिर सब मेहनत बेकार
दरिद्रता के मकड़जाल नइखे कटात
कवो आसो जागत बा त

www.bhojpurisahityangan.com

सरकार डाल देत बिया
नया लबादा
दरिद्रता के जे ऊपर से चीकन
बाकिर नीचे से बा कटाह

ई सुनि महेसवा
कहलस ई विरासत के बोझ
हमनीं से ना ढोवाई
सरकार, मलिकार, जमींदार, साहुकार
सुनीं सभे हमरा टोला के आगाज
हक-हकूक खातिर उठत आवाज
कहि रहल बा डंका के चोटि पर
हम उतारि फेंकब
राउर ओढ़ावल
दरिद्रता के लबादा।

www.bhojpurisahityangan.com

पॉवर्टी लाइन

पॉवर्टी लाइन
खींच रखले बा समाज
पहिले से
सरकार ओहि के
अपना अभिलेख में ले आइल

ओहि लाइन के ओने अलग देस
एने अलग देस
बुझात बा कि
एगो अमीर आ एगो गरीब देस
के बीच सीमा संधी जस
माजरा बा

बुझात का बा
ओहि लाइन के एक तरफ
तंगहाली के संसार
दरिद्रता के चीन के दीवार
भूख के सैलाब
नजर आवत रहे,
बुझात रहे
ऊ दूसरा ओरि के देस से
नागरिकता के दउड़ में
ढेर पीछा रह गइल बा
ओह देस में बसल
पूँजीपति शोषकन के मार से।

www.bhojpurisahityangan.com

इंसान आ अजायबघर

इंसान के भीतर के
इंसानियत त
पहिलहीं मर गइल रहे
हँ खोखला इंसान बांचल रहे
एह दुनिया में

मशीन के जुग में
आनलाइन जिनिगी भइल
एह दुनिया में
इंसान बनावे के बाति त
दूर के बाति बा
समाज में तनी मनी बांचलो
इंसान के मारे के
कोशिश लगातार जारी बा

फेरू इंसान मिली
अजायबघर में भा
दूरदर्शन के चलचित्रन में
दर्शक दीर्घा में रहिहन
रोबोट आ प्रज्ञान।

www.bhojpurisahityangan.com

प्रश्न चिन्ह

जब पीपर, बरगद ना रही
जब आहर-पोखर ना रही
जब नदी-नाला ना रही
जब जंगल-पहाड़ ना रही
तब का रही?
एगो बड़ प्रश्न चिन्ह बा
हम मनई के सामने

प्रश्न चिन्ह भा प्रश्न
भले बड़ होखे
जबाब बहुत छोट बा
सोझ आ गोट बा
तब मनई के जिनिगी ना रही
मनु के बंश बिला जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

जाल

जाल
चहुँओर फैलल नइखे
फैलावल गइल बा
साम्यवाद के, समाजवाद के
पूँजीवाद के, बाजारवाद के
रंगभेद के, मतभेद के
द्वैतवाद आ अद्वैतवाद के
जातिवाद आ वर्गवाद के
लिंग भेद के

कवनो वाद होखे
कवनो भेद होखे
ऊपर से देखब त भेद दिखाई
भीतर जाइब त एक दिखाई
वाद आ भेद के भरम मिटते
ना बांची मतभेद
ई हम ना लबेद कहत बा
देख लेब लबेद के
एगारहवाँ अध्याय के
दसवाँ श्लोक

सब वाद, भेद जाल हऽ
दाना के फेर में जनि रहीं
ओकर रस जनि चाटीं
काटीं अब तऽ काटीं
जाल के जड़ से।

www.bhojpurisahityangan.com

परख

हम खड़ा बानी
कविता, कहानी, निबंध अनेक रूप में
साहित्य संसार के समुंदर में,
समुंदर के तट परि
उठक-बइठक करत बगुलन के नजर
हमरा पर पड़ि गइल

बगुलन के नजर से
मछरी कबले बांचित
बगुलन के ताड़ल देखी
हाथ जोड़ी कहनीं
जनि परखीं
ऊपरे-ऊपरे
डूबीं मिलीं
कंकड़, पत्थर, सीप, मोती
सभ समेटले बानीं हम
सांच के आंकी
आपन चसमे से नाहीं
जन के आँखिन से
विवेचना के धार से
रचना के सटीकता के समझि
लोक के सामने रख दीं।

www.bhojpurisahityangan.com

हे बगुला देवता !
इहो बुझीं कि बगुलन के भीड़ में
रउवा अकेले पंडित नइखीं
समझे के कोसिस करीं।

www.bhojpurisahityangan.com

करजा

करजा लेके घीव पियल
ठीक ना ह
बाबा कहत रहन
बाकिर ऊ कहाँ जानत रहन कि
बबुआ भले सुनत बा
बाकिर ऊ ना मानी
हवाबाज हे
खुदो उड़ी आ देशो के उड़ाई
बढ़िया-बढ़िया जुमला सुनाई
करजा लेके विकास-एक्सप्रेस चलाई
धरि-पकड़ सभके चढ़ाई
भले ऊ एक सई पचपन लाख करोड़ करजा
देश के नांवे बा
बाकिर माथ तोहरो थुराई
जब करजा पर हेड बंटाई

करजा लेके घीव पियल
आज के दउर में
बदनामी ना विकास के पहचान ह
अंबानी, अडानी के विशाल कारपोरेट जगत
ओकरे निसान ह
नारा सुनले बानी नू
देश का विकास, आपका विकास

www.bhojpurisahityangan.com

इहवाँ शब्द पर ध्यान देब
'आपका' आदर सूचक शब्द
उपयोग कइल गइल बा
ई हमा-सुमा खातिर नइखे
ओकरा खातिर बा
जेकर विकास खातिर करजा में
आपन लाभांश बा
जे बइठा रखले बा गोद में,
गोदियो के करज होला
जे चुकावे के पड़ेला
ना चुकाइब त उऋण कइसे होखब
व्यापार आ बाजारवाद के आपन सिद्धांत होला
बबुआ रघुकुल के नायक ना हवन
बाकिर बचनवद्धता गोदी के प्रति
नायाब बा

करजा के खेल के
वर्तमान गति खूब तेज बा
तेज गति घातक होला
देखब कहीं भेष बनावे में
देश जनि डूबे
विकास यात्रा कहीं
सभके जनि ले डूबे
दूरदृष्टी राखीं
बाकिर करजा देश माथे रखि ना
ना त बिना हाथ-गोड़ के
देश कइसे ऊँचा उड़ पाई?
करजे तले दबि के
देश मुरझाई
देर-सबेर मर जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्य आजु काल्हु

कवि रवि से आगे जाए के ताकत रखेला
तबो कवि के, के पूछत बा?
आलोचक सूंघ के रचना के मरम बूझत बा
गजबे नू घ्राण शक्ति बा
कुकुरो फेल,
कहानी के प्लाट खोजे के नइखे पड़त कहानीकार के
तोपल चीज के नू खोजल जाला
सब तमाशा खुलेआम
बस ओह में मशाला डालीं
कहानी तइयार।

पत्रकारिता कुकुरमुत्तों के फेल कइले बा
घटना स्थल पर दर्शक कम
पत्रकार बेसी
दूरदर्शिता त गजबे के नूं बा!
दिल्ली बइठल गाँव के हाल
भीड़ के हिस्सा बनि
एडिटिंग के कमाल भाई
डिजिटल जुग का ना कराई?
अबहीं आगे तू देखऽ भाई।

आजु साहित्यकार के खेती हो रहल बा
साहित्यकार पैदा कइल जा रहल बा

www.bhojpurisahityangan.com

साहित्यिक संस्थान के सौजन्य से,
प्रेमचंद, पंत, निराला के दौर गइल
साहित्यकार भीरी प्रकाशक ना
प्रकाशक के दुआरी साहित्यकार जाता
धक्का मुक्की खाता
कमाता का से उहे जानत बा
बाकिर प्रेमचंद जस पनही फाटल नइखे
पनही चमचमात बा
आपन ना मंच के त लाज बा।

तबहूँ साहित्य बसात नइखे
कबीर, तुलसी, कालीदास के जाति
कीचड़ में कमल जस खिलि
आपन सुगंध बिखेरे के प्रयास करत बा
ई अलग बाति बा हाईब्रिड के जमाना में
सुगंध भले कम बाकिर
विदेशी चासनी में डूबल साहित्य
दमदम दमकत बा
खूब चमकत बा
जमाना कहत बा-जे चमकी
ऊ महकी भा ना महकी
आजु ओकरे बा गहकी।

www.bhojpurisahityangan.com

किसान आ कवि

किसान आ कवि
दूनों के राशि एके हऽ
राहु केतु के छाया त सातवां घर में बा
बाकिर वृहस्पति आ लक्ष्मी तऽ
कहीं लउकते नइखन
ओकरा घर में बइठल बा
भूख आ दुख

किसान आ कवि
कवन देवता, डीहवार के ना गोहरावेले
कवन ज्योतिषी के दरवाजा ना खटखटावेले
बाकिर भूख आ दुख आज ले ना भागल
चनरमा पांड़े साफ कहलें कि-
दूनू आदिमी के जिनिगी में ई ना ओराई
साँच मानीं अब ई जिनगिये जोरे जाई
तब दूनों लोग बोलल कि
एकरा से बढ़िया की दईब
बनवतन हमनी के कसाई।

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी

जिनिगी
स्ट्राबेरी के खेत ना हऽ
बबूर, बइर के जंगल हऽ
जे काँट-कुस से भरल बा
जेकरा में आगे जाये के रास्ता बन जाला
काँट-कुस हटावत,
बाकिर ओह राहि के निसान ना रह पावे
लौटे के राहि ना मिले
मिलेला मंजिल
भा जिनिगी बबूर, बइर के काँट-कुश में उलझि के
अझुराइल रह जाला
जतने सुझुरावे के कोसीस होला
ओतने अझुरा जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

काहे?

घर-बाहर
एकै आग लागल बा
काहे?

जल रहल बा आंतर
बाहर धधकत ज्वाला
बाजारवाद के रास्ते
आदमी कहाँ जा रहल?
ई बुझात नइखे
काहे?

भकुआइल मन
पीराइल देह
अझुराइल जिनिगी
काहे?

आँत धुआँत
रेहन धरात
खेत आ खेती
कुछवो ना भेंटात
काहे?

www.bhojpurisahityangan.com

सत्ता, सरकार
रोटी के बात
सुनले ना चाहे
काहे?

www.bhojpurisahityangan.com

देर-सबेर

तम चहुँओर
छुपल अँजोर

बा बिसवास
आजु ना काल्हु
लूटब अँजोर

देर-सबेर
हमरो अँगना
उतरी अँजोर।

www.bhojpurisahityangan.com

महँगाई

महँगाई
कमजोर के लुगाई ना ह
गाँव भर के भउजाई ना ह
कि सब केहू रगड़ के निकल जाई
डाइन हियऽ डाइन
अइसन डाइन जे आपनों सात घर ना बरावे
बेटो, भतरो, भसूर के खाले
तब जाके खूब मोटाले

महँगाई
कुछ लोगिन के
बरियार धंधा ह,
जे मंदा ना होखे
तेज तेवर से बढ़ियाला
कमीशन के जाति
नेता आ दलाल
महँगी के मार से
कहाँ छितराला?

www.bhojpurisahityangan.com

जोंक

जोंक
नमी भरल परिवेस के जंतु ह
ओकरा शुष्क परिवेस ना भावे

लइकाई में भईस आ चरवाहा के
धर लेत रहे पानी में
आसाम में आद्रता बेसी बा
हवा में उड़ियात चलेला
आँखिन देखल ह

राहुल बाबा खोज निकललन
तीन गो नया प्रजाति के
दू गोड़वा जोंक
साहूकार, जमींदार आ मिल के मालिकार

आजु दू गोड़वा प्रजाति के जोंक के
नया प्रजाति आ हाईब्रिड प्रजाति के
विकास तेजी से भइल बा,
नव विकसित प्रजाति
शुष्क आ नमी के फेरा में ना रहे
अपना अनुरूप वातावरण तइयार करेला
सत्ता आ कुर्सी से सटिके
वातानुकूलित कमरा में

www.bhojpurisahityangan.com

आजु के जोंक
अपनो जाति के छोट प्रजातियों
के ना चिन्हे
किसान, मजदूर आ गरीब पर
आजुवो ओकर फोकस बा
काहे कि ऊ लोग अनाथ के माफिक
भगवान भरोसे बा।

www.bhojpurisahityangan.com

मौन-1

हम चुपे रहब
रउवे बोलीं
ई अधिकार परंपरा से
रउवे के बा,
बा का रउवा रखले बानीं
अपने भीरी

हमार मौन के मौन जनि समझीं
मौनो बतियावला
कुछ नाहियो बोल के
बहुत कुछ बोल जाला
तब तऽ हमार मौन
रउवा से ना सहल जाला

कई बेर
अइसन होला
हमरा मौन के अर्थ
बोललको से भारी हो जाला
रउवा मन में डर समा जाला
ई सोच कि कहीं ई
तुफान के पहिले के
सन्नाटा त ना हऽ?

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर बुझियो के रउवा नइखीं बुझत
हमरा मौन के
हमार मन के
तऽ अब सुनीं
हमहूँ चुप ना रहब, बोलब
हमहूँ मुँह खोलब
बहुत दिन ले रउवा डोलवनीं
अब ना डोलब।

www.bhojpurisahityangan.com

मौन-2

मौन में
शक्ति होला
आनंद छुपल रहेला
जब मौन ऐच्छिक होला

हमार मौन
ऐच्छिक ना हऽ
थोपल हऽ तोहार
आ तोहरा समाज के

जबरन छिनले बाड़ऽ
हमरा से हमार
बोले के आजादी
मजबूर कइले बाड़ऽ
हमरा के चुप रहे के
हमरा भीतर जनमल खामोसी
तोहर दमन के कहानी
छुपा रखले बा अपना भीतर

अब जनि खोरऽ
भीतर छुपलका आगि
भभक उठी
जारि दी तोहार

www.bhojpurisahityangan.com

झूठ से सजल इज्जत के चादर
अनीति के कवच
जे ओढ़ा रखले बाड़ऽ
आजु ले हमरा ऊपर से।

www.bhojpurisahityangan.com

का बूझलऽ?

जिनिगी
खेला आ मेला हऽ
मौका मिलते
चित से पट।

कइसन खेला?
देखऽ अपने से देखऽ
रोजे त देखे के मिलेला
जवने थारी में खाला लोगिन
मौका मिलते
पट देनी करि देला छेद,
आ ऊ नइखऽ देखले
कि गइनीं बेटा मांगे
आ गवां बइठनीं भतार,
इहे सब नू मेला के
खेला हऽ।

आपन जान बचा लेल
बड़ बात हऽ बबुआ
आ होसियारी एकरे में बा
बाकिर मेला ह
अइसनों घरी भेंटा जाला
जिनिगी में

www.bhojpurisahityangan.com

कि आपन जान के फिकिर छोड़ि
आपन माटी
आपन माई
आपन अस्मिता
खातिर मर मिटेला
कवनो अर्जुन
कृष्ण के कहला पर,
इहो मेला
के खेले हऽ,
बूझ रे भाई बूझ।

www.bhojpurisahityangan.com

सुख आ भूख

सुख एक तरह के
भूखे हऽ
कतनों भेंटा जाला
मन ना भरे
आउर-आउर लागल रहेला
मनई सुखे के पीछे भागत फिरेला

कतनो खाई
पेट के भूख कहाँ ओराला

सुख आ भूख
काम आ सत्ता में
दूनों मिश्रित रहेला

सुख आ भूख
रावण, कंस, दुर्योधन पैदा करेला

कुछ लोगिन के शक्ति के भूख होला
शक्तिये से सुख होला
शक्ति खातिर ऊ सब करेला
भले ओंकरा खातिर ढेर भरेला

www.bhojpurisahityangan.com

सुख आ भूख खातिर
महाभारत नधाला
लंका जारल जाला

भूख पेट के आगि ह
सुख मन के आगि।

www.bhojpurisahityangan.com

नेता आ साधु

लूट के ले आइब, कहँवा छुपाइब
चोरवन के गुणगान, कबले गाइब।

करिया धन राउर, मनवो बा करिया
ऊजर खादी पहिर, कबले छुपाइब।

कंबल ओढ़ि रउवा, घी पियत बानीं
चढ़ल आँखि चरबी, कबले लुकाइब।

बानी संत के बा, करनी बा चोरी
धरम के नाम लूट, कबले चलाइब।

चोला बा गेरूआ, सेज प पतुरिया
साधु के नाम आप, कबले डुबाइब।

रउवा त चानी बा, नेता आ साधु
जनता के बुड़बक, कबले बनाइब।

अबहूँ सुधर जाई, समय बा बदलल
कहले किशोर हम, जन के जगाइब।

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी के मरम

बहर के डहर ना बूझीं
शहर के कहर का बूझीं।

शहर जहर से बा भरल
जहर के लहर का बूझीं।

जिनिगी ठेलात चल रहल
कठिन आ सरल का बूझीं।

धरम चहुँओर बिका रहल
धरम के मरम का बूझीं।

महल भीतर आगि बा भरल
जरल के दरद का बूझी।

आँखिन लोर से बा भरल
दूर के बाति का बूझीं।

ग़ज़ल बे राह हो चलल
गीत के मरम का बूझीं।

गरल दिन रात बा बरिसत
समय के चाल का बूझीं।

किशोर के भरम ना मिटल
करम के चलन का बूझीं।

www.bhojpurisahityangan.com

अपना के पावे के

मौन के
हलुक जनि लेब
ई एगो शस्त्र ह
शस्त्र का कहीं
ब्रह्मास्त्र ह

मौन के
आपन कवनो भाषा
ना होला
बाकिर अपना मन के
सब बाति बोल जाला
मौन रहिके

मौन
एगो महान साधना ह
योग ह
ईश्वर से एकाकार होखे के
अपना के खोजे के
अपना के पावे के

केहू कमजोर ना होखे
बरियार आ कमजोर होला
मनई के समय,

www.bhojpurisahityangan.com

कमजोर के मौन में
विस्फोटक छिपल रहेला
जब ऊ विस्फोट होला
त ज्वालामुखी बनि
चारों ओरि तबाही मचा देला
जारि-खोरि के राख कऽ देला चहुँओर
ओह घरी
ओह आँच से केहू के बांचल
संभव ना हो पावे

मौन बिनु किछु कहले
बहुत कुछ कह जाला
जहाँ शब्द मौन हो जाला
मौन मुखर हो जाला।

www.bhojpurisahityangan.com

बाजारवाद बबुआ ना हऽ मलाई

बाजारवाद बबुआ सबकुछ उड़ाई
अबहीं खेलावत बा अंगुरी पकड़ाई
गँवे-गँवे देखत चलऽ सबके चबाई
मनई का संगे-साथे देश के मुआई
साधो! बाजारवाद ना हऽ मलाई।

रिसता आ नाता अब कहाँ फरिआई
सबका के गँवे-गँवे अकेले बनाई
बाति बनाके बाजार घरे में लगाई
ओहि बजरिया में रिसतो बिकाई
साधो! पछेया बयार देखऽ सबके लुभाई।

सत्ता में आपन एजेंट बइठाई
कारपोरेट मीडिया के बैंड बजाई
खेतवा में तोर कारखाना लगाई
सत्ता के चाभी सेठ खुदहीं घुमाई
साधो! मरी किसान सेठ खूब फरिआई।

पूरब के जीवन दर्शन सभे भुलाई
देखत रहीं पछेया सभे उड़िआई
अंग्रेजी पढ़ाई आ हिन्दी बिलाई
हमनी साहित्य के जल्दी से खाई
साधो! बाजारवाद दर्शन सब से रटवाई।

www.bhojpurisahityangan.com

बाजारवाद मनई के अकेले बनाई
समष्टि भाव लोक में नजरे ना आई
पढ़ल-लिखल के बेरोजगार बनाई
मेक इन इंडिया धरल रहि जाई
साधो! बाजारवाद देश के चराई।

www.bhojpurisahityangan.com

बिगड़ल हवा

आज के ताजा खबर
दिल्ली के
हवा बिगड़ल,

दिल्ली के हवा तऽ
आज के ना
पुरान बिगड़ल हऽ
महाभारत काल होखे भा
मुगलकालीन दिल्ली
कब सुधरल रहे
दिल्ली के हवा?

देश आजाद भइल
तबो दिल्ली के
हवा कहाँ सुधरल,
राजनीति के केन्द्र के
बिगड़ल हवा
अपना चपेट में ले लेलस
पूरा देश के

माने के पड़ी
दिल्ली के हवा बिगड़ल हऽ
वास्तु के अनुसार

www.bhojpurisahityangan.com

जगह दोष मानल जाई
काहे कि सत्ता केकरो हांखे
सत्ताधारी केहू होखो
दिल्ली के कुर्सी बिगाड़ देला सभके

दिल्ली के बिगड़ल हवा के
चपेट में पूरा देश के
सांस लेल मुश्किल रहे
तब तऽ चिंता ना होत रहे
आज जब खुद दिल्ली के सांस टंगा गइल तऽ
बुझात बा बिगड़ल हवा के दर्द,
आजु जे हवा बिगड़ल बा
काल्हु जे हवा बिगड़ल रहे
ओकर दोषी के?
दिल्ली खुद

जे करबऽ, सेही भरबऽ
समय केकरो ना हऽ
लोग खातिर दिल्ली दूर बा
दिल्ली खातिर ना
ऊ दिन दूर ना जब
खुद के करनी से तू मरबऽ।

❑❑❑

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

कनक किशोर

कनक किशोर के साहित्यिक अवदान -

भोजपुरी में - हरियरी रोपत हथेली - काव्य संग्रह/ठाकुर जी के मठिया - कहानी संग्रह/गाँव गावे गीत - काव्य संग्रह/कठपुतरी - अनुदित काव्य संग्रह/अन्हरिया - अँजोरिया- काव्य संग्रह/धधकत सुरुज, पियासल धरती - काव्य संग्रह/रंग - बिरंग - कथेतर गद्य संकलन/रंग - बिरंग - २ कथेतर गद्य संग्रह/रंग - बिरंग - ३ कथेतर गद्य संग्रह

हिन्दी मे - जिंदगी धुआँ-धुआँ - काव्य संग्रह/छिपी मुस्कानों की दर्द - काव्य संग्रह/हरित उलगुलान - काव्य संग्रह/भाप बन उठती जीवन के गंध - काव्य संग्रह

संपादन - जोहार भोजपुरिया माटी भाग १- काव्य संग्रह /जोहार भोजपुरिया माटी भाग २- लघुकथा संग्रह/जोहार भोजपुरिया माटी भाग ३- व्रत कथा संकलन/जोहार भोजपुरिया माटी भाग ४- आलोचना संकलन /जोहार भोजपुरिया माटी भाग ५- गद्य संकलन /राम कहानी आपन-आपन - आत्मकथा संग्रह/आलोचना के चौपाल - भोजपुरी समालोचना/आलोचना के चौपाल भाग २ - भोजपुरी समालोचना

स्थायी पता - ग्राम+ नोनार, थाना - पीरो, जिला - भोजपुर, बिहार।
पत्राचार पता - बी/9, नेताजी नगर, रोड नंबर - 2, कांटाटोली
रांची - 834001, झारखंड।
चलभाष - 9102246536
ईमेल - kkishorejfs@gmail.com

सफलता पूर्वक तीसरा वर्ष
ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशन

काव्य संग्रह

978-81-19395-68-2

₹ 250/-

हम से जुड़ें
ज्ञानमुद्रा पब्लिकेशन
gyaanmudra publication
gyaanmudra publication @gmail.com